

अष्टाक्षरनिरूपणम्

## अथ अष्टाक्षरनिरूपणम्।

श्रीकृष्णाय नमः।

(नोट : यह अष्टाक्षरनिरूपण ग्रंथ भी श्रीमद्प्रभुचरण रचित ग्रंथावलि में माना जाता है। इस ग्रंथ का चतुर्थ व नवम् श्लोकादि से यह विदित होता है। यह भी जनश्रुति के आधारपर संभव है कि श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु व श्रीविठ्ठलनाथ प्रभुचरण श्रीगुसांजी के अनन्य आचार्य अर्थात् श्रीकाका वल्लभजी या श्रीकाका गिरधरजी रचित श्री अष्टाक्षर महामंत्र की यह सुन्दर व्याख्या है। इसी प्रकार श्री सुदर्शन कवच ग्रन्थ भी आपश्री कृत होने से पुष्टिमार्गीय वैष्णव वृन्दों को अन्याश्रय दोषों से बच पाने में सहायक है। विशेष में इन्हीं उद्देश्यों से ग्रन्थ द्वय का निरूपण किया गया है।

श्रीकृष्णकृष्णकृष्णेति कृष्णनाम सदा जपेत्।  
आनन्दः परमानन्दो वैकुण्ठं तस्य निश्चितम्॥१॥

भावार्थ :- श्रीकृष्णकृष्ण ऐसे कृष्ण ऐसे भगवान् प्रभु श्रीकृष्णनाम जो सदा जपता है, वह परमानन्दमय प्रभु के आनन्द को प्राप्त तो होता ही है। साथ ही वैकुण्ठगति भी उसकी निश्चित ही होती है।

सदा स्मरेत्तु यः कृष्णं यमस्तस्य करोति किम्।

भस्मीभवन्ति तस्याशु महापातकराशयः॥२॥

भावार्थ :- जो सदा प्रभु श्रीकृष्ण ही का स्मरण करते हैं यम उनका क्या कर सकते हैं, क्योंकि उनके जन्मजन्मांतर के महापाप भी पूर्ण रूपेण नष्ट हो जाते हैं।

यः स्मरेत्तु सदा मंत्रं श्रीकृष्णः शरणं मम।  
अष्टाक्षरं जपेन्नित्यं यमो दृष्ट्वा हि शंकते ॥३॥

भावार्थ :- जो सदा यह मंत्र “श्रीकृष्णः शरणं मम” अष्टाक्षर नित्य अर्हनिश जपता है उसे यम देखने में ही शंका करते हैं। अथवा यमराज भी उससे सकुचाते हैं।



श्रीमन्त्राद्याः प्रकाशयत जीवानां कायसाधनाः।

जीवानां हितकार्यार्थं गुरुश्रीविठ्ठलेश्वरैः॥४॥

भावार्थ :- श्री मंत्र का अर्थ प्रकाशनार्थ अथवा मंत्र का सौंदर्य जो दैवी जीवों के अलौकिक कार्य का एकमात्र साधन है श्रीआचार्य गुरु श्रीविठ्ठलेश्वर जीवों के हितार्थ प्रकाशित करते हैं।

श्रीमुखात्कथ्यते सम्यक् सदृष्टाक्षरतत्त्वतः।

विवृतिर्हृदये यस्य सोऽयं श्रीवल्लभो भवेत्॥५॥

भावार्थ :- आपश्री के श्रीमुख से सदैव सम्यक् रूपेण कथित यह अष्टाक्षर महामंत्र विवृति आप ही के हृदय में है। अथवा श्रीवल्लभ हि के हृदय से जो विवृत्त है। सो आप कहते हैं।

श्रीः श्रीसौभाग्यसंप्राप्तिः धनवान् राजवल्लभः।

कृशब्दः शोषयेत्पापं षण्शब्दस्तापसंहतिम्॥६॥

भावार्थ :- 'श्री' सकल सौभाग्य की संप्राप्ति कराता है, व धन-संपदा व राज्यादिक भी देनेवाला है। 'कृ' शब्द कहते ही समस्त पापों का शोषण हो जाता है। व 'ष्ण' ताप को हर लेता है।

शशब्दो निर्दहेद्योनिं रशब्दो ज्ञानमाप्नुयात्।

णशब्देन सदा कृष्णे दृढा भक्तिः सदा भवेत्॥७॥

भावार्थ :- श शब्दोच्चार से अन्य योनिन् ते छुटे हैं। व 'र' से ज्ञान प्राप्त होता है। 'ण' शब्द कहते ही कृष्ण की दृढ़ भक्ति प्राप्त होती है।

मशब्देन गुरौ प्रीतिः कृष्णरत्नोपदेशके।

मशब्दे हरिसायुज्यमन्ययोनिं न गच्छति॥८॥

भावार्थ :- 'म' शब्द से गुरू मे प्रीति होती है जो कृष्ण रत्न उपदेश है। पुनः 'म' कहने से श्री हरि सायुज्य (पुष्टि भक्ति) सरलतया प्राप्त कर अन्य योनिन से छुट जाता है।



इति श्रीकृष्णमंत्रार्थं यो जपेद्विठ्ठले रतिम्।

भक्तिं वैराग्यमाप्नोति भुक्तिमुक्ती करे स्थिते॥९॥

भावार्थ :- इस प्रकार जो यह 'श्रीकृष्ण' मंत्र का अर्थ विचारता है उसकी श्रीविठ्ठल में रति (प्रेम) होती है। भक्ति वैराग्यादि प्राप्त कर भुक्ति मुक्ति वाके कर में स्थित हो जाती है। अर्थात् वह भुक्ति, मुक्ति देवे में समर्थ हो जाते हैं। अब इन 'श्री' मंत्र की फलश्रुति कहे हैं।

सर्वरोगोपशमनं सर्वपापोपनाशनम्॥

ऋद्धिः सिद्धिगृहे शीघ्रं वसते सर्वदा स्थिरा॥१०॥

भावार्थ :- समस्त रोगों का शमन सहित संपूर्ण पापों का भी नाश हो जाता है। ऋद्धि सिद्धि उसके घर में स्थिर रूप से आ जाती है।

आनंदं परमानंदं सायुज्यं हरिवल्लभम्।

यः पठेच्छ्रीकृष्णमंत्रं सर्वज्वरविनाशनम्॥११॥

भावार्थ :- आनंदित हुआ वह मंत्रवेत्ता परमानंदमय भगवदसायुज्य (मुक्ति) इत्यादि को विशेष में श्रीकृष्ण सायुज्य सेवा/सत्संगादि प्राप्त करता है। इस मंत्र के प्रताप से उसके सकल ज्वरों का नाश होता है।

शत्रवो मित्रतां यांति सर्पं दृष्ट्वेवव मूषकाः॥१२॥

भावार्थ :- भूतप्रेतपिशाचादि-व्याघ्र-चौर्य (चोर/डकैत) आदि  
सकल संकटो से मुक्त हो उसके शत्रु भी उसके मित्रवत हो जाते है।

कुक्रियाः सर्वरिष्टानि कुग्रहाः सर्वनाशनाः।

आनंदमूर्तिः कृष्णोऽस्य हृदये वसते सदा॥१३॥

भावार्थ :- उस पर होनेवाली कुक्रियाएँ (मारण संमोहन) आदि  
प्रयोग व अन्य अनिष्ट क्रूर ग्रहादिक के कुप्रभावों से होनेवाली पीड़ा का  
नाश होता है व और अधिक क्या आनंदमूर्ति प्रभु श्रीकृष्ण ही उसके



हृदय मे वास करने लगते हैं।

तस्य कुत्रापि नो दुःखं सुखं सर्वत्र सर्वदा।

अहोरात्रं जपेन्नित्यं गुरुणां मंत्रमुत्तमम्॥१४॥

भावार्थ :- इस मंत्र जप को कही भी किसी प्रकार का दुःख नहीं होता अपितु सर्वत्र ही अलौकिक सुख प्राप्त होता है। जो रात्रि दिन यह आचार्यश्री गुरु उत्तमोत्तम मंत्र का पाठ करता है।

तं हि दृष्ट्वा त्रयो लोका पूतास्युः किमु मानवाः।

मध्ये च सर्वमंत्राणां मंत्रराजोत्तमोत्तमः॥१५॥

भावार्थ :- अरे मानव! तुम ही देखो इस त्रिलोकी में और अधिक पवित्र क्या है। इस मंत्रराज अष्टाक्षर महामंत्र सर्वमंत्रों पर गर्जन करनेवाले से अधिक।

इदमेव परैकांतभक्तिमान् यः सदा स्मरेत्।

ऋद्धिः सिद्धिर्गृहे सत्यं कृष्णतात्पर्यसुंदरम्॥१६॥



भावार्थ :- इस प्रकार इसे जानते हुए जो भक्तिमान सदा स्मरण करता है सकल ऋद्धि सिद्धि को ग्रहण कर प्रभु श्रीकृष्ण भगवान् के तात्पर्य को समझ जाता है।

भक्तानां हितकार्यार्थं ज्ञातव्यं स्वजनोत्तमैः।  
वेदवाक्ये महावाक्यं पुराणे भारते तथा॥१७॥

भावार्थ :- वैष्णव भक्तजनों के हितार्थ ही इसे उत्तम जन जानते हैं वह यह ग्रंथ अखिल वेद-पुराण-महाभारतादि शास्त्र के सार रूप यह है ही।

श्रीमद्वल्लभवाक्यार्थ श्रीकृष्णः शरणं मम॥

श्रीमद्वल्लभाचार्य के समस्त वाक्यों के अर्थरूप ही श्रीकृष्णः शरणं मम है।

इति विद्वलेश्वरविरचितमष्टाक्षरनिरूपणं समाप्तम्।